अध्याय–५

उपसंहार

महा शोधनिबंध के अंतिम यह पाँचवे प्रकरण को उपसंहार नाम दिया गया है । नामानुसार यह प्रकरण में संपूर्ण महा शोधनिबंध के पूर्वचर्चित चार प्रकरण के किये गये सिंहावलोकन का प्रस्तुतिकरण है । जिसमें संपूर्ण चर्चाओं के सार का वर्णन किया गया है । ग्रंथस्थ एवं शास्त्रोक्त माहिती को दर्शाया गया है । साथ ही इसमें आगे संशोधन की क्या गूंजाईश है इसका अंगूलिनिर्देश किया गया है ।

प्रकरण–१

शोधार्थी के शोध प्रबंध का विषय है ''उत्तर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन के ''मारवा थाट'' अंतर्गत समाविष्ट रागों का विशिष्ट अध्ययन'' । इसके मुताबित मेरा मूल विषय है 'संगीत' और इस गहन कला के संपूर्णत: शब्दों में बुनकर प्रस्तुत करना असंभव है । इसीलिए मैंने संगीत की केवल विभावना बाँधी है । जिसे विश्व में संगीत के स्थान की बात से शुरू करके संगीत की लौकिक एवं अलौकिकता के बारे में चर्चा की है । संगीत कला की विभिन्न व्याख्या, समयकाल, संगीतोत्पत्ति की विभिन्न मतों की चर्चा की है जैसे की धार्मिक मत, प्राकृतिक मत, वैज्ञानिक मत, सामाजिक मत इत्यादि । इसके साथ ही संगीत की वैविध्यता की चर्चा की गई है । जिसमें शास्त्रीय संगीत, भाव संगीत का समावेश होता है । तद्उपरांत संगीत की नींव समान उसके तत्त्व जैसे की ध्वनि, नाद, नादस्थान, नादब्रह्म और स्वरों के आविर्भाव के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है, जो कि संगीत की गहराई समझने में मददरूप है । इस प्रकरण के अंत में संगीत की विविध गायन शैलीयों का समावेश किया गया है जिसमें संगीत के विविध रंग, वैविध्यता का परचा मिलता है । जैसे की प्रबद्ध, ध्रुपद, ख्याल, लक्षण गीत, तराना, चर्तुरंग एवं ठुमरी की बात कि गई है । ऐसे ही विश्लेषण के साथ यह प्रथम प्रकरण का यहाँ अंत होता है ।

प्रकरण–२

प्रकरण दूसरे में उसके शीर्षक को ध्यान में रखते हुए संगीत की गहनता की बात करते हुए संगीत की परिवर्तित पद्धति पर ध्यान दिया है । वर्तमान समय की प्रचलित संगीत पद्धति थाट राग वर्गीकरण की बात निकालकर चर्चा कर रहे है तो थाट एवम् राग की नींव समान स्वरों की चर्चा किये बिना आगे बढ़ना निरर्थक माना जाएगा । इसी कारणोसर थाट को अगले प्रकरण के लिए छोड़कर यह प्रकरण में श्रुति, स्वर, सप्तक की चर्चा की है, जिसमें श्रुति के अंतर्गत श्रुति की परिभाषाएँ, श्रुति का स्थूल रूप, श्रुति की साम्यता, श्रुति की असाम्यता, श्रुति संख्या, श्रुति जाति, श्रुति के बारे में किये गये वैज्ञानिक विश्लेषण और प्राचीन ग्रंथकारों के समान श्रुतियों के बारे में चर्चा कि गई है । आगे बढ़ते हुए स्वर के प्राकृतिक उद्‌भव, स्वर की परिभाषाएं, स्वरों से संबंधी द्रष्टिकोण, स्वरों की उत्पत्ति के साथ ही स्वर के उद्‌भव स्थान के संदर्भ में मान्यताएं, सामवेद के स्वर और उनके नाम, स्वर और उनके नाम, स्वर के तीन स्थान की चर्चा करते हुए स्वरों के विभन्न रंगों को सामने लाया है, जहाँ स्वरों के मुख, भूजा, शारीरिक स्थान, स्वरलक्षण, प्रकृति, स्वभाव, रंग, स्वरों में छुपा निहीत सौंदर्य, स्वरों की उपयोगिता, वर्ष और दिन की ऋतुओं का मेल, सूर्यशक्ति, स्वर अलंकार, वादी स्वर, समय संबंध, पूवाँग, उत्तरांग, स्वर लगाव, लेखन पद्धति जैसे मुद्दो की विस्तृत चर्चा करते हुए अंत में सप्तक और संगीत में सप्तक का विकास के बारे में चर्चा करते हुए इस प्रकरण को यहाँ पूर्ण किया है ।

प्रकरण–३

शोध विषय के इस प्रकरण में शोधार्थीने शोध विषय के मुख्य मुद्दे की गहराई में चर्चा की है । इस प्रकरण के शुरूआत में भारतीय शास्त्रीय संगीत पद्धति के मत की चर्चा की है, जिसमें शिवमत, हनुमान मत, रागार्णव ग्रन्थमत, कल्लीनाथ मत, भरत मत और महमद रजा मत के बारे में चर्चा की है । आगे बढ़ते हुए 'थाट' शब्द का महत्व समझाया गया है जिसमें थाट की व्याख्या समझाते हुए थाट वर्गीकरण और उसमें थाट की रचनाविधि को जानते हुए पं.व्यंकटमुखी के ७२

थाट के बारे में चर्चा की है तथा ७२ थाट के नाम के साथ कर्णाटक पद्धति में ७२ थाट के स्वरों के साथ दर्शाया है । ७२ थाट के पश्चात् ३२ थाट तथा उनके नाम की चर्चा की है । तद्उपरांत ३२ थाट से पं. विष्णुनारायण भातखंडेजी के १० थाट वर्गीकरण की चर्चा की है, जिसमें थाट के नियम तथा मेल वर्गीकरण को विस्तृतरूप से समझाया गया है, यह वर्गीकरण के बाद एक थाट से ४८४ रागों की उत्पत्ति के बारे में शोध की गई है । थाट से रागों की उत्पत्ति के बाद राग के बारे में चर्चा की गई है जिसमें हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पत्ति और विकास के साथ राग की संगीतोत्पत्ति का कारण बताते हुए राग की शास्त्रोक्त व्याख्या, प्रकृति, गायन समय, समय विभाजन, रागभेद, स्वर और समय की द्रष्टि से रागों के तीन वर्ग, रागों का समयचक्र, राग में अर्ध्वदर्शक स्वर मध्यम की महत्वत्ता, राग विस्तार, रागचयन तथा दस वीध राग लक्षण दर्शाते हुए राग के नियम बताएँ हैं और इस तरह से यह प्रकरण का अंत किया है ।

प्रकरण–४

पूर्व निर्देशित तीन प्रकरणों में शोधार्थी ने शोधप्रबंध की हर सूक्ष्म बातों का स्पष्टीकरण करते हुए चर्तुथ प्रकरण में केवल हमारे मुख्य उद्देश्य पर ध्यान केन्द्रित करना स्वाभाविक था । उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में थाटों का एक विशिष्ट महत्व रहा है । थाटों के विषय में अनेक मतमतांतर के साथ नवीन थाट रचनाओं का औचित्य प्राप्त होता है । उत्तर भारतीय संगीत में मुख्य दस थाट प्रचलन में हैं । वह थाटों में से मारवा थाट का एक पारंपारिक अध्ययन इस प्रकरण में दर्शाया गया है, जिसमें मारवा थाट तथा राग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में विस्तृत चर्चा कि है तथा मारवा थाट के मारवा और उनके समप्रकृतिक राग के बारे में चर्चा करते हुए मारवा थाट के प्रचलित राग एवं अप्रचलित रागों के बारे में बंदिशों के साथ रागों का विवरण किया है तथा बंदिश मे और राग में छुपे हुए निहित सौंदर्य के बारे में सविस्तृत चर्चा की है । बंदिश के शब्दों से उत्पन्न होते रसोत्पत्ति के अनुभव तद्उपरांत बंदिश का लिपिकरण, स्वरों संगति जैसे मुख्य तत्त्वों की चर्चा की है । प्रचलित रागों की सूचि में राग : मारवा, राग : जैत, राग :

पूरिया, राग : पूरिया कल्याण, राग : भटियार, राग : ललित, राग : विभास, राग : सोहनी जैसे रागों का विश्लेषण किया है तथा प्रकरण के अंतिम दौर में मारवा थाट के अप्रचलित रागों में राग : पंचम, राग : पंचम मारवा, राग : भंखार, राग : मार्ग हिंडोल, राग : मालीन, राग : मालीगौरा, राग : रत्नदीप, राग : ललित पंचम, राग : वराटी, राग : साजगिरी, राग : मृगनयनी, राग : धन्यधैवत जैसे रागों का विश्लेषण किया है और यह प्रकरण को पूर्ण किया है ।

प्रकरण–५

प्रकरण–५ के आरंभ में जाना की उपसंहार शब्द को न्याय देते हुए शोधार्थीने इस प्रकरण में पूर्व चार प्रकरण में विवरण की गई माहितीओं का सिंहावलोकन इस प्रकरण में प्रस्तुत किया है । इसी के साथ शोधार्थी के महा शोधप्रबंध के आखरी प्रकरण के आखरी चरण में अपने सारे मुद्दो को एक बार एकत्रित करके रखा है । प्रकरण–१ में संगीत की उत्पत्ति, विकास एवं मनुष्य के जीवन में स्थान की चर्चा की गई है जिससे संगीत के असर का अंदाजा हम लगा सकते है । संगीत के उद्दभव के साथ ही नाद, ध्वनि तथा शास्त्रीय संगीत की विभिन्न गायन शैलियों के बारे में चर्चा की गई है । आगे बढ़ते हुए प्रकरण–२ में संगीत पद्धति को ध्यान में रखते हुए थाट तथा राग के नींव समान श्रुति, स्वर और सप्तक के बारे में विस्तृत चर्चा की है । प्रकरण–३ में थाट के बारे में गहराई में चर्चा की है । थाट तथा उनके जन्य रागों के साथ ही भारतीय संगीत पद्धति में महत्व रखनेवाले मत – शिवमत, हनुमान मत, रागार्णव मत, कल्लीनाथ मत, भरत मत, महमद रजा मत की विस्तृत चर्चा की है । साथ ही थाट वर्गीकरण और पं. व्यंकटमुखी के ७२ थाट उसके बाद ३२ थाट और पं. विष्णुनारायण भातखंडे जी द्वारा दीये गये हुए १० थाट का विशिष्ट अध्ययन करते हुए थाट के नियम, मेल वर्गीकरण तथा एक थाट से ४८४ रागों की उत्पत्ति का विस्तृत विवरण किया गया है तथा राग के बारे में भी गहराई में चर्चा की है । प्रकरण–४ में जनक थाट मारवा की गहराई में चर्चा की गई है । थाट तथा थाट के अंतर्गत रागों का वर्णन किया है और अंतिम प्रकरण में शोधप्रबंध का मुख्य उद्देश्य की और प्रकाश डाला है जिसमें मारवा

थाट अंतर्गत प्रचलित एवं अप्रचलित रागों का वर्णन, रागों की विभिन्न रसयुक्त बंदिशें एवं रसात्मक अध्ययन को स्थान दिया गया है जिससे एक आकर्षक संदेश देने का प्रयत्न किया गया है कि कोई भी राग किसी एक प्रकृति या रस के आधीन नहीं होता । किसी भी राग के मर्यादित स्वरों को व्यवस्थित रूप में बाँधा जाए तो एक ही राग में से हमें विभिन्न रसों की युक्ति हो सकती है जिसका कारण वह रागों की बंदिशों के शब्द, बंदिशों की स्वररचना, न्यास स्वर भी हो सकते है । इस परिपाक का अनुभव करने के लिए संगीतकार का केवल द्रष्टिकोण विकसीत होना चाहिए, जिस संदेश को देने का प्रयत्न इस शोधप्रबंध में किया गया हैं । इस महा शोधनिबंध के अंत में शोधकार्य में उपयोग में लिए गए संदर्भग्रंथों की सूचि देकर महा शोधनिबंध को पूर्ण घोषित किया है ।